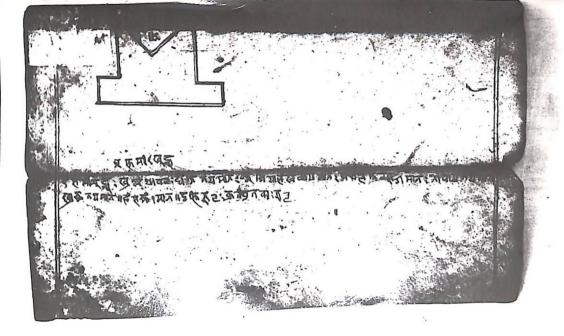
1. BHAIRAVAGNI - YAZRA-VIDNI 1 . SIRA HUTI VIDHI NEPAL-GERMAN MANUSCRIPT PRESERVATION PROJECT Place of Detent: Roma Kanpaca AMALE: EMPTIMEN MOLO Running No. 1 . 474 Manustri N No. STATONTRO TITLE ( acr. to Colophon(Catalogue ) ! ABAU -> 1. ATHA BHAI RAYAGNE- YAGYA- ARAMBHAM KARI KSETE ! HOMA PIMDANE SILOHOMA-YAYA-VIDHI / 2. ITI SIRA HOMA-9/ HOMA PIDAM PIDAM NE VIDHI SAMAPTAN. 3. TITIBERAUTI VIDDHI SAMAPTAN. AUTHORI No. of Server: 39 Securet Ser as cm 36 . 7 x 11 . 2 Red No. I . 90 Date of Straing: 24.9 . 29 Serge - Depling. Herest. Thiphe. Michilli Remarks: pages - Thymnets. page 146, deplined by worms - 145 - 1460 - 146 SCRIBED: TAYANTA RASA Daw : Nt. VA.-E



स्ति केमार प्रशास के प्रश

क्षाचायिक तान्त्र प्राप्ति स्व तय्या विश्व क्षा तय्य ॥ दे र गाज्यो सुलिस र व स्व न स्व त्यानां ॥ थ म क्षेत्र क्षेत्र स्व त्या विश्व क्षेत्र विश्व क्षेत्र स्व क्षेत्र क्षेत्

विवशास्त्रीत्वाव ती निवत मृद्ध्य गर्नी, प्रविश्व व व शास्त्री है। इस महिला की स्थान के प्रविश्व की प्

नित्राम् स्वास्त्रास्य विकास स्वास्त्र स्वस्त्र स्वास्त्र स्वास्त

दिक्त न् विया स्वीति विवाद के क्रिक्त के विश्व के क्रिक्त के विश्व के क्रिक्त के क्रिक्

तयतमाविशाक्षिय क्वायनमा विशालाक । यहिमयान मार्क्ष निसंत्रायनमा विशाक्षित्र वात्र निसंत्रायनमा विशाक्षित्र वात्र मार्क्ष विवाक्ष क्षेत्र विभाविभाविक स्वान मार्क्ष विवाक्ष वात्र प्राप्त क्षेत्र विभाविभाविक स्वान मार्क्ष विवाक स्वान मार्क्ष विशाविभाविक स्वान मार्क्ष विवाक स्वान मार्क्ष विश्व के सम्मान क्षेत्र के स्वान क्षेत्र के सम्मान क्षेत्र के सम्मान क्षेत्र के सम्मान क्षेत्र के सम्मान क्षेत्र के स्वान क्षेत्र के सम्मान क्षेत्र के समान क्षेत्र के सम्मान क्षेत्र के समान क

with a series of the land of the College of the

क्रित्राशी मल्रेत्रवाया। ॥दिल् एतप्यान। ॥ एत् विषया प्रतिक्षा अस्य स्वामाना । एत् विषया प्रतिक्षा । अस्य वापितान्य । क्रित्रा अस्य वापितान्य । क्रित्र वापितान्य । क्

नमाक्षत्वर प्रथम । मार्के विक्रिक स्टिश्न स्वार्थित । निर्मा स्वार्थित । के जो स्वयस्य में मान्स ते राप्ता प्रमाण । दें। में रिक्र में मान्स ते राप्ता विक्रिया प्रमाण । दें। में रिक्र में मान्स ते राप्ता विक्रिया विक्रिया यह मार्के भरे स्वर्धि मान्स मार्के भरे से स्वर्धि मान्स मार्के भरे से स्वर्धि मान्स मार्के मान्स मार्के मार्

मिल्रियप्रविकाशिय त्राय सम्भाव साय भाषा न वाजिकाण एवं क्या न विकास स्थित स्था कि स्था के स्था कि स्था

वकायत्रभायक्षत्र। उन्हें के द्यायकाद्यां ति स्वकृति कृति। इ। उन्हें क्षायकाद्यां कि वित्रकृति कि कि वित्रकृति कि वित्रकृति कि कि वित्रकृति कि वित्र

वार्विष्ठियपता अव का शायतमाव् वं प्रीयिमित्रिति। उ को व कि मुक्त यत्र में के को व कर्य के का विकास के को व कर्य के का विकास के को व कर्य के का विकास के का विकास

उद्विह स्यायनप्राम्मार्ङ् जो द्रुक क्रवणास्य तमार्ङ जो जिए स्वाक क्रक स्यास्य तमार्ङ जो असिव क्रिक्यास्य निमार् जो द्रिक्यास्य निमार्थ जो देन स्वास्य निमार्थ निमार्थ जो देन स्वास्य निमार्थ निमार्य निमार्थ निमार्य निमार्थ निमार्थ निमार्थ निमार्थ निमार्थ निमार्य निमार्थ निमार्य निमार्थ निमार्थ निमार्थ निमार्थ निमार्थ निमार्थ निमार्य निमार्य

मठाउँ द्वातायामं कार्यक्तिस्यं समयाव ब क्षेत्रयी क्षा च्या च स्वात स्वात स्वात स्वात स्वात स्वात स्वात स्वात स् मत्रा इंका द्वात क्ष्य स्वात स

मार्यासाला वित्तिय ने गुन्न त्था मार्क काँ म् यियसी एउन स्वा मान का विद्वा ने वस्ता ने वस्ता या स्व के के स्व के

संग्राश

द्वाराव मानस्य या स्ट्रास्त्र क्षेत्र क्षेत्र मानस्य प्राप्त के त्रामिक्षा वृत्त मानस्य वृत्त स्वा अति। विभिन्न मानस्य या स्ट्रास्त्र के त्रामिक्षा वृत्त मानस्य वृत्त स्वा अति। वृत्त स्व मानस्य के स्व

नामित्याधिवशकस्त्रवाक्त स्त्रभावाक स्त्रभावाक माहण्या वाहणा स्त्रिय खालां के त्र स्त्री म्द्री खालां कि वाहणा कि वाहणा के वाहणा

तियाप्य प्रिकास्ति हित्से विष्ण्या विश्वा विश्व विश्व

विकामी खाइना मुखामा भाषिति वदना तंत्र सार न्या भार प्रति क्षणा में प्रवान । वीमा खाए म् सा सार क्षण का मान स्वास का स्वास का मान से आ मान स्वास का स्वास का किया किया का स्वास का स्वा

the best property and the state of the state

गांववदन निमानिकामित्राणिकाणिका हिम्म द स्वी मिला है। यह स्वास के स्वाम विद्वारि मान कु सुस्व मान के स्वाम निक् मान कि साम कि सिना के स्वाम प्रकार के स्वाम कि स्वाम निक्का के स्वाम निक्का कि सिना में सिना के सिना कि सिना के सिना क

months of the Said State of the State of the said

प्राणको नी जनमा नायवल देश से ना निव्या प्रवास सुनता नाइ उत् न दी। जन माने सुन माने

पैवलानायाः दुनाय् तरायावि (तमस्पर्धनाता स्वाया स्वाया स्वायावि । विद्यापि ।

A CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR

त्त्र्रवस्ति दिश्यिष्रियविश्व विका स्वास्ति दिश्व क्षेत्रे क्षेत्

सन्गल्याः यायस्य मन् ग्रांया मात्राविविद्या है। विद्या है। विद्या

Lant to the ship of the state o

रक्षा वाजा महित्र स्वायना महित्र स्वायना महित्र स्वायना स्वायना स्वयन स्वयन स्वयन स्वयन स्वयन स्वयन स्वयन स्वय क्षेत्र स्वयन स्

त्रवति मृक्षिद स्वा ६ ६६ मारिकात स्व वृष्क् गति विद्विता म्या मिणि विद्वित स्व विद्विति विद्विति । स्व विद्विति स्व विद्विति । स्व विद्विति स्व विद्विति । स्व विति । स्व विद्विति । स्व



वस्ती विद्यासका ते मामिनियम् विद्युर मामिपिती॥ ॥ मास्य दी मह्य मसिप्रामिको मिन्न मामिनियम् विद्युर मामिनियम् विद्युर मामिनियम् विद्युर मिन्न मिन्न मास्य देश मास्य मामिनियम् विद्युर मिन्न मिन्न मास्य मिन्न मिन्न मास्य मिन्न मिन्

हिंगि । वें अभाग कें ह्या शें हु ॥ भिट्ठ कर में मुंब दे सु हु की रें ये बन्या कर माने के स्वार के स्वार कर के स्वार के स्वर के स्वार क

त्रभ्याक्ता । । अवक्रप्रभावाक्ष्य भवनं स्वरं स्

दशपक्र में के नविवास्त्र के किया के स्वय के स्वयं के स्व

हा। र । एं क् स्व हे से नवाय हा हा। ॥ झाय हा विद्वित स्व म न स्व स्व हो हो ते सह से स्व स्व सिंह कि स्व सिंह के विद्य से मिस हो हो हो हो हो है । सिंह हो हो से सिंह के विद्य से सिंह के विद्य से सिंह के सिंह

ात्रिक्षिलाई दे खेरेत्रवाय खारुं। । विक्रित्रवाय खारुं। । विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। । विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। । विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। । विक्रित्रवाय खारुं। विक्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवाय खारुं। विक्रित्रवा

आ। ॥दं कण लीरे नवाय खाला॥ति उदिविविव लीति नित्र प्रियम वैश्विष्ठ आत्रा करा से स्ना धर्म का विद्यु स्व क्ष्य के स्व के

रामिश्वित्वा । विश्व देश के त्रामिश्व के कि स्वास्त्र के स्वस्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वस्त्र के स्वस्त्

मानिक्षित्र । विश्व ।

उत्तर्भाय खाकाति स्व एक एक त्र मध्य का प्रवादिक प्राप्त के का प्रवाद के स्व के

उर्वस्ताक्षित्रस्याल्यावस्वावस्य मास्य वायायास्य विस्तरस्य । स्वित्वस्य । स्वित्वस्य । स्वित्वस्य । स्वित्वस्य किस ने विक्रिक भाष्यवस्य क्ष्मित्र । स्वित्व विद्यास्य स्वाद्यात् । स्वित्वस्य स्वाद्याः स्वाद राजायाच्या ग्राम् ति प्राप्ति विक्ति विक्ति

तालास्य श्वालावाय्वा। दे काँ तक्ष्य स्व श्वाला व से क्षत्र श्वाला । १ई की नाहित्य श्वाला तथ्य स्व विकास स्व वित स्व विकास स्व विकास स्व विकास स्व विकास स्व विकास स्व विकास स्व

विक्रिक में है ना निर्वेद्ध नादि। कि स्वारिषक म् (मिका चित्रा चित्रा मिका भागा कि धारा। ॥ ग्रायु उप व ह नी। ॥ कि व को द्धे व निर्वेद्ध ने । । व स्वार्थ के व को द्धे व निर्वेद्ध के निर्वेद के निर्ध के निर्वेद के निर्वेद के निर्वेद के निर्वेद के निर्वेद के निर्व

कि स्यातास्व न जिल्ला मार्क वर्ष मान बन में भामी विशाह विशा वा गार्व न बहु कर्म गर्य के वा प्राप्त के विश्व के कि मार्क विश्व के कि मार्क के मार्क के

प्राचार नविश्वाक्ष त्राज्य का विश्वाक्ष विश्व

तमद्रांतिश्वराभष्टितं स्थ्तास्त्रं नारागाट्न मासिक्षितं व्यद्नितं र यह नावाद्यस् गोणिक नावाद्यस्य गाणिक नावाद्यस्य गोणिक नावाद्यस्य गाणिक नावाद्यस्य गोणिक नाव

गावा न विश्वा अंग्राजिमिता ति प्रांका ईप्रभावा हो जावका है। विश्वा विश्वा विश्वा विश्वा विश्वा विश्व विश्व

तकद्र जी ग्रह गण प्रहित्त स्य गाम ति ना प्रभादन स्वाप्ति विशेष प्रदेश र यह ना वाद स्याणि है जो है। ति सा प्रवास के स्वाप्ति क

वित्र में । । । श्रुक्त स्वरं स्वरं कि प्रकृति क्र स्वरं के स्वरं कि स्वरं कि स्वरं के स्वरं

विता तरि। गर्द क्षेत्र क्षेत्र के तर्वाय का लेगा क्षेत्र त्वक । गर्व द्वा वा क्षेत्र विकास का त्रिक विकास के व द्या अक्षीं वार्ष । । यो वा नवंदी व प्रदेश के विवास के क्षेत्र के कि क्षेत्र का देश के विवास के कि विकास के कि वि विकास के कि विकास के

साहानाध्यताम् सा धीस्०५२ माय छक्त साथक क्याय अन्य क्याय अन्य सिष्ठ तय न माजा छ र गर्व छ नमा बिक्ताय नेमा। ने का काल खाल गर्विया भरी है। दें स्मृत्विहा। में गल्या भ म्यू लिखा। इस्या। नो नी न स्मृत्विक्त ने नियम काल हिल्यामा यो अभिष्ठ स्मृत्विहा स्वात् काल काल स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति

